Seventeenth Loksabha

an>

Title: Issue regarding alighnment of bridge between Digha and Nayagaon in Bihar.

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण): अध्यक्ष महोदय, मेरे राजनीतिक जीवन का पार्लियामेंट के भीतर और विधान सभा से लेकर यहां तक 27 वां या 28 वां वर्ष है । कई बार मैं सोचता हूं कि हम लोग अपने राजनीतिक जीवन में कुछ प्रस्ताव देते हैं और कुछ बातें रखते हैं । मैं अपने सारण संसदीय क्षेत्र में जाता रहता हूं । मैं 26 साल से उस सड़क पर जा रहा हूं, उस पुल को पार कर रहा हूं, उस गांव में जा रहा हूं । इस सदन के बाकी सदस्य भी मुझे इस बात की सलाह दें कि 26-27 साल से जो व्यक्ति अपने संसदीय क्षेत्र में जाता है, क्या उसकी जानकारी जो अधिकारी साल या दो साल पहले आता है, उससे कम है या ज्यादा है? यह पीड़ा हमेशा बनी रहती है । मैं 27 साल से वहां जा रहा हूं और जो अधिकारी सचिवालय में बैठकर आता है, वह एक या डेढ़ साल के लिए आता है । व्यवस्था का यह एक ऐसा स्वरूप है, जिसमें संचिका उसके पास आती है । शायद वह मेरे जिले में कभी न गया हो, लेकिन पटना में बैठे-बैठे उसको सपना आता है कि यह काम बहुत अच्छा है और संचिका में अनुबंधित करके उसे कैबिनेट में ले जाता है और एप्रूव कराकर ले आता है । इससे वह हमारे 26 साल की इस राजनीतिक यात्रा को शून्य कर देता है । मैं समझता हूं कि यह सभी जिलों में लागू है । मैं समझता हूं कि आपको भी अपने राजनीतिक जीवन में कोटा में कोटा शहर से लेकर कोटा के गांवों तक जानकारी होगी, हो सकता है कि पहले चरण में न हो । मैं 30 साल से अपने संसदीय क्षेत्र में घूम रहा हूं और जो विषय मैं लेकर आ रहा हूं, उसमें मेरी पीड़ा कहां है । बिहार 400 किलोमीटर गंगा नदी से बंटा हुआ है, जिसे हम उत्तर बिहार और दक्षिण बिहार कहते हैं । सरकार की नीतियों के हिसाब से पूरब क्षेत्र में गंगा के ऊपर महात्मा गांधी सेतु बना । श्रीमती गांधी ने उसका उद्घाटन किया था । उसके बाद भागलपुर और साहेबगंज तक कई पुलों का निर्माण हुआ, जो पूरब क्षेत्र में बिहार को उत्तर बिहार और दक्षिण बिहार से

जोड़ने के लिए पर्याप्त थे । उसके पश्चात् एक रेल पुल था, जिसे अंग्रेजों ने मोकामा में बनाया था । जब राम विलास जी रेलवे मंत्री थे तो उन्होंने सोनपुर और दीघा के बीच रेल पुल की स्वीकृति दी, जिससे उसको पटना से सोनपुर तक जोड़ना था । फिर किसी अधिकारी को अच्छा लगा कि यह पुल बन गया है तो पुल के ऊपर एक सड़क चढ़ा दी जाए । उसके बाद वह पुल वापस लौटकर उल्टी दिशा में पश्चिम दिशा की तरफ चला जाता है ।

अभी बिहार सरकार ने एक पुल के लिए चार लेन की स्वीकृति दी है । मैं बिहार के मुख्य मंत्री जी का आभार व्यक्त करना चाहूंगा कि उन्होंने राज्य के खजाने से इसका निर्णय किया है । दूसरे, केन्द्र सरकार ने पश्चिम दिशा में दिघवारा-शेरपुर और सारण जिलों के बीच में एक और चार लेन का पुल दिया है । लेकिन मेरी पीड़ा इस विषय पर है और मैं इसके साथ ही अपनी बात को समाप्त करूंगा कि यह दीघा से लेकर सोनपुर तक का जो पुल है, वह व्यक्ति जो अधिकारी है, जिसने संचिका में दस्तखत किया है और जो उस क्षेत्र में कभी गया भी नहीं है, उसने वहां पर बैठे-बैठे जो अलाइनमेंट तय कर दिया है, वह पूरी तरह से गलत है । मैं हाल-फिलहाल बिहार के मुख्य मंत्री जी के साथ एक मंच पर था । हमारे क्षेत्र के एक 70 साल के बुजुर्ग राघव जी हैं, मुख्य मंत्री जी ने उनको बुलाकर पूछा कि यह अलाइनमेंट सही है या नहीं सही है? उन्होंने कहा कि पूरे राजनीतिक जीवन की लड़ाई थी कि दीघा से लेकर नयागांव के बीच में पुल निकले, लेकिन इन लोगों ने उस अलाइनमेंट को बदल दिया है ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से और अपने वर्षों के अनुभव से यह कहना चाहता हूं कि हम सब राजनीतिक लोग जब कोई प्रस्ताव सरकार के पास लाते हैं और जो अधिकारी उसकी जानकारी नहीं रखते हैं, तो बड़ा दुख होता है । एक बड़ा निर्णय जो हजार वर्षों तक रहेगा, उसमें उसका आक्षेप होता है । कहीं न कहीं ऐसे बड़े निर्णय जिसमें हजार-डेढ़ हजार करोड़ रुपये खर्च होते हैं, उसमें वहां के स्थानीय जन-प्रतिनिधियों का भी मंतव्य लिया जाए । मैं आपके माध्यम से बिहार सरकार से आग्रह करूंगा कि दीघा और नयागांव के बीच का जो अलाइनमेंट है, उसे ठीक किया जाए । ऐसा ही निर्णय जो कहीं-कहीं पर माननीय

सांसदों के क्षेत्रों में भी होता है, उनकी भी सलाह ली जाए और उनके राजनीतिक अनुभव का लाभ उठाया जाए ।

माननीय अध्यक्ष :

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल और

श्री नारणभाई काछड़िया को श्री राजीव प्रताप रूडी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।